परिशिष्ट

परिशिष्ट-1

(प्रश्नावली)

(साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी को शोधार्थी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली के प्राप्त उत्तर)

ओमप्रकाश वाल्मीकि -

1 **कृपया आप अपने बचपन संबंधी विस्तार से कुछ बताएँगे ?**

- मैंने पिछले पत्र में भी लिखा था कि बचपन की विस्तृत तस्वीर 'जूठन' में हैं, लगता है उससे आपकी जिज्ञासा शांत नहीं हुई है। बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता भाईयों में सबसे छोटा था, लाड़ला था, इसीलिए स्कूल भी भेजा गया । अछूत परिवारों का जैसा जीवन होता है वही भोगा । अध्यापकों की गालियाँ सुनी,तो साथियों की प्रताड़नाएँ इसीलिए अर्तमुखी होता गया । साहित्य से गहरा जुड़ाव भी उसी दौरान हुआ।

2 **आपकी शिक्षा संबंधी ज्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है आपने एम्.ए. तक की शिक्षा कहाँ और कैसे प्राप्त की है ?**

- इंटर में अध्यापकों की साजिश का शिकार हुआ, फेल कर दिया गया । आर्डनैंस फैक्टरी में तकनीकि प्रशिक्षणार्थी के रूप में भर्ती होकर जबलपुर (मध्य प्रदेश) आया। दो वर्ष की तकनीकि शिक्षा के बाद एक प्रतियोगिता में चयनित होकर बंबई में दो वर्ष उच्च तकनीकि डिप्लोमा किया । आर्डनैस फैक्टरी चन्द्रपुर (महाराष्ट्र) में एक डिजाईनर के तौर पर नौकरी मिली । 13 वर्ष चंद्रपुर में रहकर देहरादून तबादला हुआ । और देहरादून आते ही अधूरी पढ़ाई शुरू की इंटर, बी.ए. और फिर

एम्.ए.(हिंदी साहित्य) 1992 में हेमवती बहुगुण गढ़वाल, श्रीनगर वि.वि. से पास किया, व्यक्तिगत परीक्षार्थी के रूप में ।

3 **आपने विवाह संबंधी अपनी भाभी की छोटी बहण चंदा जी से सीधी बातचीत की थी, इसका कोई खास कारण ?**

- परिवार के लोग जिस तरह की लड़कियाँ मेरे लिए ढूँढ़ रहे थे, उससे मैं सहमत नहीं था, और कोई वजह नहीं थी।

4 **आपको बचपन में शिक्षा कम और काम ज्यादा स्कूल में करना पड़ता था, फिर मास्टरों की दहशत और बच्चों द्वारा 'चूहड़े' का कहके चिढ़ाना यह सब बाते आज यांद आती है, तो कैसा लगता है ?**

- पीड़ादायक है सब कुछ, लेकिन जीवन की सच्चाई से अर्जा भी तो मिली। तकलीफों से भागा नहीं उनसे लड़कर ही जीता हूँ । अभी भी तो यातनाएँ परछांई की तरह साथ है, छुटकारा कहाँ है ।

5 **आपका वैवाहिक जीवन कैसा चल रहा है ?**

- सुखद ।

6 **आपकी जन्मतिथि एवं जन्मस्थान संबंधी विस्तार से लिखिए ?**

- बचपन जिस परिवेश में बीता, वहाँ जन्मतिथियों को संभालकर रखना संभव नहीं था। दाखिले के समय मास्टर साहब ने जो लिख दिया वही जम्नतिथि बन गयी । 30 जून 1950 , क्यों कि उसी दिन में पिताजी मुझे स्कूल लेकर गए थे। बरला गाँव उत्तर प्रदेश मुजफ्फरनगर जिले में स्थित है।

7 **आपकी नाटक देखने या उसमें अभिनय करने की रूचि आज भी जीवित है ?**

- हाँ, नाटकों में आज भी रूचि है।

8 **आखिर ओमप्रकाश जी को ' वाल्मीकि' से इतना लगाव क्यों हैं?**

- ओमप्रकाश के साथ 'वाल्मीकि' लगाव से नहीं लगाया। बल्कि विरोध दर्ज करने के

लिए ताकि मुझसे कोई मेरी जाति न पूछे ।

9 **आपके कथा साहित्य से हिंदू संस्कृति या सवर्ण समाज उनका दलितों के प्रति देखने का दृष्टिकोण और व्यवहार इस पर फर्क पड़ सकता है,आप की क्या राय है ?**

- सवाल फर्क पड़ने का नहीं है, बल्कि सच्चाई को सामने लाना है। जिस झूठ के सहारे समाज चल रहा है उसे दर्पण दिखाना है। मनुष्य की अस्मिता का प्रश्न है ।

परिशिष्ट - 2

(प्रश्नावली)

(साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी को शोधार्थी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली के प्राप्त उत्तर)

ओमप्रकाश वाल्मीकि

1 **आपका ' ओमप्रकाश 'यह नाम किसने रखा है ?**

- मेरा नाम 'ओमप्रकाश' शायद माँ ने ही रखा होगा, क्योंकि घर में माँ मुझे 'ओमप्रकाश' नाम से बुलाती थी।

2 **आपका विवाह किस पद्धति से हुआ है ?**

- हिंदू रीति से विवाह हुआ है, क्योंकि ससुराल पक्ष की यही जिद्द थी ।

3 **आपकी पत्नी का स्वभाव किस प्रकार का है ?**

- पत्नी का स्वभाव सहज और सामान्य है ।

4 **आपको अपने जीवन में नौकरी मिली है या आपने चुनी है ?**

- क्या जीवन के क्षेत्र चुनने की छूट भारत में दलितों को है ? क्षेत्र से ज्यादा जीविका चलाने के लिए जो भी नौकरी सामने आयी कर ली । कोई अफसोस नहीं है। जीवन और समाज की यही वास्तविकता भी है।

5 **आप आर्डनैस फैक्टरी में कौनसे पद पर कार्यरत है ?**

- मैं भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय के उत्पादन विभाग के उत्पादन विभाग के आधीन आर्डनैस फैक्टरी की ओप्टो इलैक्ट्रोनिक्स फैक्टरी, देहरादून में अधिकारी हूँ।

6 **आपको नाटकों के लिए जो पुरस्कार मिले है कृपया जरा विवरण दीजिए ?**

- नाटकों में जो पुरस्कार मिले हैं उनका संक्षिप्त विवरण -

1) 'आधे-अधूरे' (मोहन राकेश) अभिनय, निर्देशन एवं प्रस्तुति के लिए पुरस्कार ।

2) 'हिमालय की छाव' (वसंत कानेटकर) अभिनय, निर्देशन एवं प्रस्तुति के लिए पुरस्कार ।

3) 'सिंहासन खाली है' (सुशीलकुमार सिंह) अभिनय के लिए पुरस्कार।

4) 'दो चेहरे '(स्वरचित) अभिनय के लिए पुरस्कार ।

7 आप कहानियाँ, कविता के लिए चर्चित है, आपकी 'जूठन' आत्मकथा भी बहुचर्चित बन गयी है, कभी आपने 'उपन्यास' संबंधी सोचा है ?

- उपन्यास लिखा है अभी छपा नहीं है।

8 आपकी पहली कहानी तथा कविता कौन सी है ? कब प्रकाशित हुई है ?

- पहली कहानी 'अंधी बस्तियाँ' (निर्णायक भीम, सम्पा. आर.कमल, कानपुर) पहली 'कविता' - नवभारत (नागपुर)।

9 आपके परिवार में कौन-कौन रहते हैं ?

- परिवार में सिर्फ पत्नी ।

10 आपका मित्र परिवार -

- मित्रों की गिनती संभव नहीं हैं, समुचे भारत में सैंकड़ों मित्र है।

11 आप अभी अपने जीवन में खुश है ?

- जीवन की खुशी किसी एक चीज में नहीं होती है, न उपलब्धियों में ही । आस-पास जो जिस तरह घट रहा है वहाँ कोई खुश कैसे रह सकता है ।

12 आप के जीवन में शेष क्या है ?

- जीवन में अभी मिला ही क्या है ? सभी कुछ तो अभी शेष है।

13 आपके ' मुंशीजी ', ' पाल्ला ', ' महर्षि ' और 'ओमप्रकाश' ऐसे नाम है, इनमें से आप को कौनसा नाम ज्यादा पसंद है ?

- भी नाम अपने हैं, अपनों ने दिये हैं, सभी प्रिय हैं।

14 साहित्य क्षेत्र में आप ' गुरू ' किसे मानते हैं ?

- ये गुरू-शिष्य की परंपरा ब्राह्मणवाद की देन है, प्रेरणास्त्रोंत बाबासाहेब भिमराव आंबेडकर है।

15 आप दलित है, क्या इसलिए दलितों पर लिखते हैं ?

- दलित हूँ, दलित जीवन की विभिषिका में झुलसते जनमानस को देखकर भी यदि मैं न लिखू तो रचना कर्म व्यर्थ है, बेमानी भी।

16 मुझे आपके नीजि मित्रों के नाम चाहिए कृपया बताएँगे ?

- एक हो तो बताएँ - अनेक मित्र हैं, जो सिर्फ नीजि ही नहीं सामाजिक संघर्ष में भी साथ है। लेखकों में शरणकुमार लिंबाले, लोकनाथ यशवंत,(महाराष्ट्र), डॉ. कृष्णा, डॉ. धर्मपाल (हैद्राबाद), डॉ. अच्युतन (कोची, केरल), डॉ. जोसेफ मकवान, नीरज पटेल (गुजरात), डॉ.कुटट्टीमणि (धारवाड, कर्नाटक), सूरजप्रकाश (मुंबई), डॉ.कमलाप्रसाद (भोपाल) आदि ....

17 भगवान ने आपके सामने साक्षात प्रकट होकर पूछा की आप आगले जन्म में कौन सी जाति में जन्म लेना पसंद करेंगे तब आपका उत्तर क्या होगा ?

- पहली बात तो मैं ' भगवान ' जैसी किसी धारणा में विश्वास नहीं करता,न पूनर्जन्म में ही, इसलिए अगले जन्म में पैदा होने का सवाल ही नहीं, फिर भी ब्राहमण होना नहीं चाहूँगा, न हिंदू होना ।

परिशिष्ट - 3

(प्रश्नावली)

(साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि जी को शोधार्थी द्वारा भेजी गई प्रश्नावली के प्राप्त उत्तर)

ओमप्रकाश वाल्मीकि -

1 सर आप अपने जीवन में अनेक सारे पुरस्कारों से सम्मानित हुए है कृपया विवरण देंगे ?

- 1. डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार, 1993।
2. परिवेश सम्मान, 1995 ।
3. जयश्री सम्मान, 1996 ।
4.कथाक्रम सम्मान, 2000 ।

2 आपकी मेघदूत नाम की नाट्य संस्था के कुछ मंचन किए हुए महत्त्वपूर्ण नाटक तथा आपने अभिनय किए हुए नाटकों की सूची देने की कृपा करे ।

- **नाटक-** 1. लगभग 60 नाटकों में अभिनय एवं निर्देशन ।
2. अनेक प्रतियोगिताओं में अभिनय एवं निर्देशन पुरस्कृत।
3. कुछ महत्त्वपूर्ण नाटक जिनमें अभिनय किया ।
1. 'आधे-अधूरे' (मोहन - राकेश)
2. 'दूलारी बाई' (मणिमधुकर)
3. 'एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ' (शरद जोशी)
4. 'अंधी का हाथी' (शरद जोशी)
5. 'हिमालय की छाया' (वसंत कानेटकर)
6. 'सिंहासन खाली है' ।
7. 'इकतारे की आँख' (मणिमधुकर)
8. 'अ स्टडी इन द नेड' (इंग्लीश)
9. 'दो चेहरे' (स्वयंलिखित)
10. 'अब्दुल्ला दीवाना (लक्ष्मीनारायण लाल)

परिशिष्ट - 4

(साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि (देहरादून) से शोधार्थी द्वारा दूरभाष पर लिया गया सीधा साक्षात्कार)

1 **आपकी सारी कहानियाँ दलित जीवन से संबंधित हैं, जिस तरह गैर दलितों ने भी दलितों पर अच्छा लेखन किया है, उस तरह आपको नहीं लगा की मैं भी दलित होकर गैर दलितों पर लेखन करूँ ?**

- जी आपका सवाल बिल्कुल सही है। मैं गैर दलितों पर भी लिखना चाहता हूँ । लेकिन आज जिस बात की आवश्यकता है, उसीको ही मैंने प्राथमिकता दी है, जो स्वाभाविक है।

2 **आपको बचपन में पढ़ाई के दौरान अनेक सारी समस्याओं का सामना करना पड़ा था, उस वक्त आपने अपने भविष्य के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखा था ?**

- भविष्य के प्रति आशावादी कोशिशे तो थी, लेकिन जैसी परिस्थिति थी, उस समय भविष्य की यांद भी न आती। कल का दिन ही अगला दिन बन जाता था। ऐसे में सिर्फ कोशिशे करना और सहते रहना ही जीवन बन गया था।

3 **भविष्य में दलित लेखन के साथ-साथ आपसे सर्वहारा वर्ग का चित्रण संभव है ?**

- जी .... पहले मुझे सर्वहारा शब्द का अर्थ समझाइए, जान बुझकर हम ऐसे शब्दों को क्यों अपना रहें हैं। अरे यह तो उनकी देन हैं जिन्होंने सामजिक रचना को बढ़ावा दिया है। पहले आप इस शब्द को समझे फिर कभी हम इस पर चर्चा करेंगे ।

4 **आपकी सारी कहानियाँ पीड़ित, शोषित, अन्यायग्रस्त प्रतीत होती हैं, क्या ऐसी रचनाओं से दलित जीवन के प्रति सवर्णों में परिवर्तन आ जाएगा ?**

- देखिए साहित्य से ऐसी उम्मीद करना ठीक नहीं है। अगर आप सवर्णों को पूछेंगे, तो वे कहेंगे ऐसी स्थितियाँ है ही नहीं, मेरा साहित्य का प्रयोजन भूमि तैयार करना, अलग प्रकार का वातावरण तैयार करना है। जिससे समाज में स्थित विकृत स्थितियाँ समाज के सामने आ जाए, जो इतिहास बनाने में सक्षम है। अब हालही में, मैं दिल्ली विश्वविद्यालय गया था, वहाँ 'जूठन' का अँग्रेजी अनुवाद पढ़े हुए कुछ विद्यार्थी मेरे पास आए और उन्होंने कहा सर हमें मालूम ही नहीं था कि भारत में ऐसी भी स्थितियाँ है। लोगों को आज भी मालूम नहीं है।लोग आज भी दलितों की स्थितियों को समझते नहीं है, और उन्हें समझाने का प्रामाणिक काम मेरा साहित्य कर रहा है।

5 **आप आज इतने बड़े हो गए हैं। चारों ओर तथा हिंदी साहित्य क्षेत्र में आपकी काफी चहल-पहल है। क्या आज भी आपको दलित का अनुभव दिलाने वाली घटनाओं का सामना करना पड़ता है ?**

- जी हाँ...आज भी ऐसे कई अनुभव है। .... मैं एक दिन कररखाने से जा रहा था, तो एक कार्यकर्ता ने आकर मेरे पाँव छुए । वास्तविक मुझे यह पसंद नहीं है। मेरे जाने के बाद उस कार्यकर्ता को कुछ लोगों ने पूछा अरे वो तो दलित है और तुम ठाकूर होकर उसके पैर छुते हो .....मेरे साथ बात करनेवाले कई ऐसे मित्र है जो बाहर गले मिलते हैं, चाय पिते हैं, लेकिन मेरे घर आने से कतराते हैं। पीठ पीछे आलोचना करते हैं। वक्त आने पर आपको उनके नाम भी बताऊँगा ।

6 **सर आपको संतान ...?**

- जी नहीं है मुझे कोई संतान नहीं है लेकिन मेरे साहित्य, मेरे भाव-भावनाओं को समझने वाले आप जैसे विद्यार्थी मेरी संतान ही हैं।

7 **सर आपको भाषाएँ कौन-कौन सी आती हैं ।**

- पंजाबी हरियानी से मेल खानेवाली कौरवी तो बोलता हूँ। मराठी, अँग्रेजी, बंगला, पंजाबी भी बोलता हूँ। आप से अभी बात कर रहा हूँ, इसका मतलब हिंदी भी बोल लेता हूँ।

8 **सर आप का खान-पान कैसा है ?**

- क्यों भई कोई खास-बात, कुछ खिलानेवाले है क्या ? मैं पूर्णत: मांसाहारी हूँ। किसी भी प्रकार का मांस किसी भी दिन किसी भी जगह खा सकता हूँ। सामने वाले की दृढ़ भक्ति तथा स्नेह है तो मैं न खानेवाली वस्तुएँ खाने के लिए तैयार हूँ। प्यार से कोई खिलाएगा तो मैं जहर भी खाने के लिए तैयार हूँ, बस! सामनेवाले की नीयत अच्छी होनी चाहिए।